

सूरह इब्राहीम - 14



सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 35 में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा कुर्आन के भेजने का कारण बताया गया है। और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोयें खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे, तथा काफिरों को अल्लाह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अल्लाह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने ने अपनी संतति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी। किन्तु आज उन की संतान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत है।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा। यह (कुर्आन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

الرَّسُوبُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

2. अल्लाह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफिरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।
3. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।
4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिक्मत वाला है।
5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।
6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फिरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ
لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوْمِهِ يُبَيِّنُ
لَهُمْ قُبُلَ اللَّهِ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

وَاذْكُرْ لِمُوسَىٰ إِذْ ذَكَرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْهِمْ إِذْ أَخْرَجَهُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ
مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ

रहने देते^[1] थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोसणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूंगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।
8. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ़्र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा^[2] सराहा हुआ है।
9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्होंने ने अपने हाथ अपने मुखों में दे^[3] लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में है, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में हैं।

وَإِذَا تَذَكَّرْنَاكُمْ لَمْ تَتَذَكَّرُوا أَفَ كَرُمْتُمْ لَأَرْزُقَكُمْ وَلَٰكِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَشُعُوبٌ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أَرْسَلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ۝

- 1 ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो। और उन की स्त्रियों का अपमान करें।
- 2 हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले-पिछले तथा सब मनुष्य और जिन संसार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी। (सहीह मुस्लिम, 2577)
- 3 यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया, और दाँतों से उंगली दबा ली।

10. उन के रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला^[1] रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित^[2] अवधि तक अवसर दे। उन्होंने ने कहा: तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

11. उन से उन के रसूलों ने कहा: हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।

12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं? और हम अवश्य उस दुःख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।

13. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِى اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْا
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُوْنَ اَنْ
تَصُدُّوْنَ رِءَاۤءَاۤءَنَا كَاَنْ يَّعْبُدَ الْاَبَاۤءُ
قَالُوْا نَاۤءِلُ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۰

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنۢ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ وَاَمَّا كُنَّا
اَنْ نَّآئِيْكُمْ سُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلٰى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۱

وَمَا لَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰۤى سَبِيْلَنَا
وَلَنَصِيْرًا عَلٰى مَا اَذِيْتُمُوْنَۤ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝۱۲

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاِلٰى رُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ
اَرْضِنَاۤ اَوْ لَنَعُوْدَنَّ فِيْۤىٔ مَلِكِنَاۤۚ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ

1 अपनी आज्ञा पालन की ओर।

2 अर्थात् मरण तक संसारिक यातना से सुरक्षित रखे। (कुर्तुबी)

لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वही की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

وَلَنَسْخُكُنَّ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١١﴾

14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े^[1] होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

وَأَسْتَغْفِرُوا خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٢﴾

15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

مِنْ ذُرِّيَّتِهِ جَهَنَّمَ يُسْقَى مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ﴿١٣﴾

16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

يَجْعَلُهَا وَلَا يَكْذِبُ غُفْرَةً وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٤﴾

17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَوْمَادٍ شَتَّتَتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَى شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ﴿١٥﴾

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य से) दूर का कुपथ है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ يَٰسَأِيدَ هَبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे?

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

1 अर्थात् संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर^[1] आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

22. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया^[2] जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले^[3] तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्संदेह अत्याचारियों के लिये दुख दायी यातना है।

23. और जो ईमान लाये, और सदाचार

وَرَزَّوَالِهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعْفُؤُ الَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا أَفَهَلْ أَنْتُمْ مُّقْتَدُونَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ قَالَ الْوَاهِدُنَا
اللَّهُ لَهْدِيكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُنَا أَمْ صَبْرُنَا
مَا لَنَا مِنْ مَّحْصُونٍ ۝

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لِنَاقِضَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي
عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ
لِي قَلِيلًا تَكْفُرُونَ وَلَوْ مَوْأَنَافُسُكُمْ مَا أَنَا
بِصَاحِبِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِصَاحِبِي إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا
أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

2 स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

3 संसार में।

करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत यह होगा: तुम पर शान्ति हो।

نَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ

24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा^[1] (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उस की शाखा आकाश में है?

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۚ

25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

تُؤْتِي أَكْثَرَهَا ثَمَرًا لَّيْسَ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

26. और बुरी^[2] बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

1 (कलिमा तय्येबा) से अभिप्रत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। जो इस्लाम का धर्म सूत्र है। इस का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है। और यही एकेश्वरवाद का मूलाधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहा: मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरता, तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहा: मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने भी बोलना अच्छा नहीं समझा। जब वे कुछ नहीं बोले, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने कहा: वह खजूर का वृक्ष है। (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, सहीह बुखारी: 4698, सहीह मुस्लिम: 2811)

2 अर्थात् शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

27. अल्लाह ईमान वालों को स्थिर^[1] कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है, करता है।
28. क्या आप ने उन्हें^[2] नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया।
29. (अर्थात्) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान है।
30. और उन्होंने ने अल्लाह के साझी बना लिये, ताकि उस की राह (सत्धर्म) से कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।
31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़ की स्थापना करें और उस में से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीके से दान करें, उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ
وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا
قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا وَبَسَّ الْقَارِ ﴿٢٩﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ
تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا سَعِيرَ فِيهِ وَلَا جُلَّةٌ ﴿٣١﴾

- 1 स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। (कुर्तुबी)
बराअ बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहा: मुसलमान से जब कब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह «ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह» की गवाही देता है। अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इसी के बारे में यह आयत है। (सहीह बुखारी: 4699)
- 2 अर्थात्: मक्का के मुशरिक, जिन्होंने ने आप का विरोध किया। (देखिये: सहीह बुखारी: 4700)

होगा, और न कोई मैत्री।

32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।

33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में^[1] कर दिया।

34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा^[2] और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।

35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो

اِنَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهِ مِنَ
الشَّجَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهَارَ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ وَسَخَّرَ
لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

وَاِنَّكُمْ مِنْ كُلِّ مَآسَآلٍ لَّتَمُوْهُ وَاِنْ تَعَدُّوا نِعْمَتَ
اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ

وَإِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ

رَبِّ اِنَّهُمْ اَضَلُّنَا كَثِيْرًا وَّاِنَّ النَّاسَ

1 वश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।

2 अर्थात् तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यकता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करे। अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।

38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, धरती में और न आकाशों में।

39. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।

42. और तुम कदापि अल्लाह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर

فَمَنْ تَبِعْنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٠﴾

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٦٢﴾

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٦٣﴾

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٦٤﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٦٥﴾

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ

रहे हैं। वह तो उन्हें उस^[1] दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आखें खुली रह जायेंगी।

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेँगी, और उन के दिल गिरे^[2] हुये होंगे।

44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगे: हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

45. जब कि तुम उन्हीं की बस्तियों में बसे हो, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

46. और उन्होंने ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास^[3] है। और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

الظَّالِمُونَ هُمُ النَّاسُ يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿١٤﴾

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿١٥﴾

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ نَّحِبُّ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعِ الرَّسُولَ الْوَحِيدَ ﴿١٦﴾ أَفَسَبَّأْتُمْ مِن قَبْلِ مَا كُنتُمْ تَزُولُونَ ﴿١٧﴾

وَسَكُنْتُمْ فِي مَسَاكِينِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَنَبَّيْنَكُمْ كَيْفَ قَعَلْنَا بِإِبْرَاهِيمَ وَصَرَّيْنَا لِلْكَافِرِينَ الْأَمْثَالَ ﴿١٨﴾

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿١٩﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन के लिये।

2 यहाँ अर्बी भाषा का शब्द "हवाअ" प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ शून्य (खाली), अर्थात् भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

3 अर्थात् अल्लाह उस को निष्फल करना जानता है।

47. अतः कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष^[1] उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।
49. और आप उस दिन अपराधियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।
50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।
51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلَفًا وَعَدِ رَسُولُهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو نِقَامٍ ﴿٤٧﴾

يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ وَرَبُّكَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤٨﴾

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

سَرَابِلُهُمْ مِنْ طَيْرٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوا بِهِ وَيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذْكُرُوا الْأَلْبَابَ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् अपनी कब्रों (समाधियों) से निकल कर।